

# जातियों का राजनीतिकरण (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार

राजेश्वर राम

भारत में औपनिवेशिक दौर में और उसके बाद के शुरुआती दशकों में जाति को आधार बनाकर परिवर्तनकारी राजनीति करने की कोशिशें हुईं। अम्बेडकर ने दलितों में राजनीतिक चेतना भरने की पुरजोर कोशिश की। दक्षिण भारत में रामास्वामी नायकर पेरियार के नेतृत्व में ब्राह्मण विरोधी आंदोलन चला। इसी तरह, राम मनोहर लोहिया ने पिछड़ों की राजनीतिक गोलबंदी करके कांग्रेस और ऊँची जातियों के वर्चस्व को तोड़ने की कोशिश की। लेकिन इसके बावजूद सामान्यतः जाति और राजनीति के आपसी संबंधों को संदेह की नजर से देखा जाता रहा है। राजनीति में जातिवाद की शिकायत करते हुए अक्सर इसे हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए खतरा माना जाता है। आमतौर पर लोकतांत्रिक राजनीति को आधुनिकता और जाति को परंपरा का प्रतीक मानते हुए दोनों के विरोधाभासपूर्ण संबंधों पर जोर देने की प्रवृत्ति रही है। अकादमिक स्तर पर राजनीति में जाति की भूमिका को समझने की कोशिश सन् साठ के दशक में शुरू हुई। 1964 में लिखी अपनी किताब में मॉरिस जोन्स ने यह माना कि स्वतंत्र भारत की नई परिस्थितियों के कारण राजनीति जाति के लिए तथा जाति राजनीति के लिए महत्वपूर्ण हो गई।